[This question paper contains 6 printed pages]

Roll No.	

ASME-24BC-SKT-I

SANSKRIT (PAPER-I)

संस्कृतम् (पेपर-I)

Time Allowed : 3 Hours [Maximum Marks : 100

समयः होरात्रयम् (घंटा-त्रयम्) अधिकतमाः अङ्काः 100

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

प्रश्नपत्र-सम्पृक्ताः विशेषनिर्देशाः

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions.

कृपया प्रश्नोत्तरलेखनपूर्वं निम्नलिखितनिर्देशाः सावधानतया पठनीयाः

1. There are EIGHT questions divided in TWO Sections.
   खण्डद्वयेषु विभाजिताः अष्टौ प्रश्नाः ।
2. Candidate has to attempt FIVE questions in all.
   परीक्षार्थिभिः पञ्चैव प्रश्नाः समाधेयाः ।
3. Question Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each Section. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रश्नसंख्या 1 तथा 5 अनिवार्ये। शेषप्रश्नेषु त्रयाणां समाधानं प्रदेयम्। तत्र प्रत्येकखण्डात् एकम् अवश्यं करणीयम् । प्रत्येकप्रश्नस्य तस्य भागस्य च अङ्काः तत्रैव निर्दिष्टाः ।
4. Question Nos. 1, 5 and 8 must be answered in SANSKRIT and the remaining questions must be answered either in SANSKRIT or in the medium authorized in the Admission Certificate. Answer written in SANSKRIT must be in Devanagari script. Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
   प्रश्नसंख्या 1, 5 तथा 8 संस्कृतभाषयैव समाधेयाः । शेषप्रश्नानां समाधानं यथेच्छं संस्कृतभाषया अथवा प्रवेशपत्रे स्वीकृत-भाषया करणीयम्। संस्कृतभाषा देवनागरी-लिप्या एव लेखनीया। प्रश्नोत्तरस्य शब्दसीमा यदि क्वापि निर्धारिता तर्हि सा सीमा पालनीया।
5. Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   प्रश्नक्रमानुसारमेव क्रमेण प्रश्नोत्तराणि प्रदेयानि। अंशतः प्रदत्तं प्रश्नोत्तरमपि संपूर्णप्रश्नोत्तरवत् परिगणितं भविष्यति । यदि उत्तरपुस्तिकायां किमपि पृष्ठं रिक्तं (अलिखितं) स्यात् तर्हि तत्र स्पष्टरूपेण अनुलोम-विलोमरेखा (x) विधेया।
6. Re-evaluation/Re-checking of answer-book of the candidate is not allowed.
   परीक्षार्थिनः उत्तरपुस्तिकायाः पुनर्मूल्याङ्कनस्य पुनर्निरीक्षणस्य वा अनुमतिर्नास्ति।

खण्ड-A / Section-A

1. अधोलिखिताः सर्वे प्रश्नाः संस्कृतभाषया समाधेयाः –

Answer all the following (to be written in Sanskrit language):

(a) अधोनिर्दिष्टाः सर्वे प्रश्नाः संस्कृतभाषया समाधेयाः – **2 × 5 =10**

(i) शुभकामना अभिनन्दनानि - सन्धिविधायकैः सूत्रैः सह प्रक्रियासिद्धिःकर्तव्या ।

(ii) आचार्य्यः – अत्र केन सूत्रेण यकारस्य द्वित्वम् ?

(iii) मद्धवरिः - इति पदस्य सन्धिविच्छेदं कृत्वा प्रक्रियासिद्धिःकर्तव्या ।

(iv) उपदेशेऽजनुनासिक इत्- अत्र उपदेशो नाम किमिति व्याकुरुत ।

(v) यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम् इत्यस्य सोदाहरणं व्याकुरुत ।

(b) अधोनिर्दिष्टाः सर्वे प्रश्नाः संस्कृतभाषया समाधेयाः – **2 × 5 =10**

(i) टच् प्रत्ययविधायकं सूत्रं सोदाहरणम् उल्लिख्यताम् ।

(ii) प्रातिपदिकार्थः कः? सूत्रोल्लेखपूर्वकं व्याकुरुत ।

(iii) अव्ययीभावोऽव्ययीभावश्चेत्यनयोः सूत्रयोर्मध्ये को भेदः?

(iv) रमा योगाभ्यासं कुरुते ?- वाच्यपरिवर्तनं क्रियताम् ।

(v) पुण्येन दृष्टो हरिः अत्र रेखाङ्कितपदे सूत्रोल्लेखपूर्वकं विभक्तिप्रयोगः विधेयः।

2. अधोलिखिताः सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः –

Answer all the following:

(a) मध्यकालिक-भारतीयशास्त्रचिन्तनपरम्परायाः विकासे नव्यन्यायभाषायाः योगदानं प्रतिपाद्यताम् । **10**

Describe the contributions of Navya-Nyāya Language in the development of medieval Indian Tradition of Scientific wisdom.

(b) भारतीयभाषाशास्त्रीयचिन्तनपरम्परायां पाणिनीयप्रविधेःउपादेयत्वं विमृश्यताम् । **10**

Discourse on Methodology of Aṣṭādhyāyī towards contributions to Indian Linguistic Tradition.

3. संस्कृतकाव्यशास्त्रीयदृशा अधोलिखितस्य वाक्यस्य सविस्तरं समालोच्यताम्।

Elaborate critically the following sentences given below in the light of Sanskrit Poetics.

(a) नहि चमत्कारविरहितस्य कवेः कवित्वं काव्यस्य वा काव्यत्वम् **10**

Indeed, a poet without Camatkāra(Super mundane pleasure) has no poetic ability, and a poem without Camatkāra (Super mundane pleasure) has no poetic essence.

(b) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। रमणीयता च लोकोत्तराह्लादजनकज्ञानगोचरता। **10**

A poetry (Kāvya) is a word conveying a pleasing sense. The state of being pleasing is the state of being the object of that knowledge which produces super mundane pleasure.

4. अधोलिखिताः सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः –

Answer all the following:

(a) भारतीयबौद्धिकपरम्परायां पदवाक्यप्रमाणशास्त्राणां स्वरूपं वैशिष्ट्यञ्च विमर्शयत। **10**

Discourse the nature and peculiar contribution of the Pada-Vākya and Pramāṇa Śāstra-s in Indian Intellectual Tradition.

(b) अधोलिखित-श्लोकमाश्रित्य परम्पराशब्दस्य दार्शनिकी व्याख्या कर्तव्या। **10**

ऊर्ध्वोर्ध्वमारुह्य यदर्थतत्त्वं धीः पश्यति शान्तिमवेदयन्ती।

फलं तदाद्यैः परिकल्पितानां विवेकसोपानपरम्पराणाम्॥

Describe philosophical implications of the technical word named Paramparā as per following verse:

Getting ascended high and high the realization of the ultimate entity by the untiring intelligence is an outcome of a series of steps of prudence created by the earlier ones.

खण्ड-B / Section-B

5. अधोलिखितस्य गद्यांशस्य संस्कृतानुवादो विधीयताम्: 20
Translate the following passage into Sanskrit:

राष्ट्रीय-शिक्षा-नीति-2020 में भारतीय ज्ञान मीमांसा पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारतीय ज्ञान मीमांसा के सम्यक् अवबोधन में संस्कृत ज्ञान परम्परा का अपना विशिष्ट योगदान है। संस्कृत भाषा परिष्कृत, परिमार्जित और वैज्ञानिकी भाषा है। संस्कृत भाषा में न केवल संस्कृत साहित्य के ग्रन्थ लिखे गए हैं बल्कि इस भाषा में भारतीय दर्शन, सामाजिक विज्ञान, राजनीति विज्ञान, प्रबन्धन विज्ञान, गणित, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, अध्यात्म, भाषाविज्ञान, आयुर्वेद, कृषिविज्ञान, जैव, रसायन, भौतिकादि शास्त्रों का युक्तियुक्त चिन्तन प्राप्त होता है। संस्कृत की भाषा वैज्ञानिकी है अत एव सम्पूर्ण संस्कृत स्वयं में विज्ञान है। यहाँ विज्ञान से तात्पर्य आधुनिक विज्ञान से है और आत्मज्ञान से भी है।

संस्कृत भाषा बृहत्तर भारत की भाषा है जिसमें बृहत्तर भारत की समावेशी संस्कृति अनुस्यूत है। संस्कृत भाषा ही वह मुख्य प्रवेशद्वार है जिससे प्रविष्ट होकर भारतीय ज्ञान मीमांसा को जाना जा सकता है। भारतीय ज्ञान मीमांसा के ज्ञान से ही विलक्षण भारतीय संस्कृति और भारतीय बौद्धिक परम्परा को जाना जा सकता है। संस्कृत भाषा ही सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं को एकीकृत करने में समर्थ है। संस्कृत भाषा भारत की पहिचान है। संस्कृत से ही भारत की प्रतिष्ठा है। संस्कृत ही भारत को विश्वगुरु बनाने में समर्थ करती है। परा और अपरा विद्या की साधनिका भी संस्कृत भाषा ही है । अत एव संस्कृत को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के कार्यान्वयन में अन्तर्विषयक रूप में एवं बहुविषयक रूप में पढ़ने और पढ़ाने पर विशेष बल दिया गया है। संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु सरल-मानकीकृत संस्कृत के प्रयोग का प्रावधान किया गया है और संस्कृत की शिक्षा संस्कृत भाषा में ही प्रदान करने पर विशेष बल दिया गया है। इस प्रकार संस्कृत भाषा और संस्कृत वाङ्मय के ज्ञान से विद्यार्थियों का सर्वाङ्गीण विकास सम्भव होगा। यहाँ सर्वाङ्गीण विकास से तात्पर्य भौतिक और आध्यात्मिक विकास के समन्वय से है। संस्कृत द्वारा विद्यार्थी और शोधार्थी भारतीय ज्ञान परम्परा का ज्ञान प्राप्त करने पर पाश्चात्त्य ज्ञान परम्परा के साथ तुलना करके भारतीय ज्ञान मीमांसा की साम्प्रतिक वैश्विक उपादेयता की सिद्धि करने में समर्थ होंगें।

अथवा

The National Education Policy-2020 has given special attention to Indian knowledge systems. The proper understanding of Indian knowledge systems has a unique contribution of the Sanskrit knowledge tradition. Sanskrit is a refined, polished, and scientific language. Not only have Sanskrit literary texts been written in this language, but logical reasoning in Indian philosophy, social sciences, political science, management science, mathematics, astrology, rituals, spirituality, linguistics, ayurveda, agricultural science, biology, chemistry,

and physical sciences are also found in this language. Sanskrit is a scientific language, and thus, the entirety of Sanskrit itself is science. Here, science refers to both modern science and self-knowledge.

Sanskrit is the language of Greater India, in which the inclusive culture of Greater India is woven. Sanskrit is the primary gateway through which one can enter and understand Indian knowledge systems. Through the knowledge of Indian knowledge systems, one can understand India's unique culture and intellectual tradition. Sanskrit is capable of unifying all Indian languages. Sanskrit is India's identity. India’s prestige is due to Sanskrit. Sanskrit enables India to become a world teacher. The means of both higher and lower knowledge is also Sanskrit. Therefore, special emphasis has been given in the National Education Policy-2020 on studying and teaching Sanskrit in both interdisciplinary and multidisciplinary ways. Provisions have been made for the propagation and dissemination of simplified standardized Sanskrit, and special emphasis has been placed on teaching Sanskrit in Sanskrit itself. In this way, the holistic development of students is possible through the knowledge of Sanskrit language and literature. Here, holistic development refers to the integration of material and spiritual development. Through Sanskrit, students and researchers will gain knowledge of the Indian knowledge tradition and will be able to compare it with the Western knowledge tradition, thereby proving the contemporary global relevance of Indian knowledge systems.

6. अधोलिखिताः सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः –
Answer all the following:

(a) निर्बीजसमाधिः- सविस्तरं विविच्यताम्। **10**
Elaborate critically – Nirvīja Samādhiḥ

(b)पूर्वमीमांसादर्शनानुसारं धर्मस्य स्वरूपं विविच्यताम्। **10**
Describe critically the nature of Dharma as per Pūrva Mīmāṃsā philosophical system.

7. अधोलिखिताः सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः –
Answer all the following:

(a) साङ्ख्यदृष्ट्या सृष्टिविमर्शः क्रियताम् **10**
Explain evolution of the Universe as per Sāṅkhya Philosophical system.

(b) भारतीयदर्शनिकसम्प्रदायानां संरचनात्मकं स्वरूपं विविच्यताम्। **10**
Provide an overview of the Indian Philosophical Systems.

8- अधोलिखितं विषयमवलम्ब्य संस्कृतभाषायाम् एको निबन्धो लिख्यताम्: 20

Write an essay in Sanskrit on one of the following topics:

संस्कृतं विज्ञानञ्च (Sanskrit and Science)

अथवा

सा विद्या या विमुक्तये (Knowledge is that which liberates)

****